मौत के बाद जीवित जल की प्यास या उसे खोने का अंजाम

मनुष्य दो तत्वों से बना है: शरीर और आत्मा। दोनों का अलग-अलग पोषण होता है, और दोनों की मृत्यु के अलग-अलग कारण होते हैं। जिस प्रकार शरीर भौतिक भोजन और पानी से जीवित रहता है, वैसे ही आत्मा को भी आत्मिक भोजन और आत्मिक जल चाहिए ताकि वह जीवित रह सके।

यदि शरीर को खाना या पानी न मिले, तो वह मर जाता है। आग से जलकर भी शरीर नष्ट हो जाता है। उसी प्रकार आत्मा को यदि आत्मिक भोजन और जल न मिले, तो वह भी मर जाती है। लेकिन आत्मा को भौतिक अग्नि नहीं जला सकती, क्योंकि शरीर और आत्मा का स्वभाव एक-दूसरे से भिन्न है। परमेश्वर ने उन्हें अलग-अलग प्रकृति दी है।

अब जब हम पवित्र शास्त्रों की ओर लौटते हैं, तो हम देखते हैं कि मसीह यीशु हमारे शरीर और आत्मा, दोनों को उद्धार देने आए थे। लेकिन आत्मा को जीवन देने के लिए वह भौतिक साधन नहीं, बल्कि आत्मिक साधन लाए।

इसलिए उन्होंने कहा:

यूहन्ना 6:35
“यीशु ने उन से कहा, ‘जीवन की रोटी मैं हूं; जो मेरे पास आता
है, वह कभी भूखा न होगा; और जो मुझ पर विश्वास करता है, वह कभी प्यासा न होगा।’”

यहां जो रोटी और जल की बात हो रही है, वह आत्मिक है, न कि भौतिक।

मृत्यु के बाद प्यास – जीवित जल की

वे लोग जो मसीह में विश्वास किए बिना मर जाते हैं, उनकी आत्माएं सीधे नरक (जहन्नुम) में चली जाती हैं—जहां वे अंतिम न्याय का इंतज़ार करती हैं। यह नरक अंतिम दण्डस्थल नहीं है, बल्कि अस्थायी कारावास है जैसे कोई कैदी अदालती पेशी से पहले हिरासत में रखा जाए।

इसके बाद आग की झील (lake of fire) आती है, जहाँ हर एक व्यक्ति
को उसके पाप के अनुसार न्याय मिलेगा।

आप कल्पना करें, मृत्यु के बाद आपकी आत्मा जीवित रहती है लेकिन वह जीवित जल के बिना तड़प रही है। आत्मा जल के लिए पुकारेगी, मगर

उसे नहीं मिलेगा। जैसे यीशु ने पुकार कर कहा:

यूहन्ना 7:37-38
“यदि कोई प्यासा हो तो मेरे पास आए और पिए।
जो मुझ पर विश्वास करता है, उसके हृदय में से जीवन के जल की नदियाँ बहेंगी।”

यह जल केवल इस जीवन में ही नहीं, परंतु मृत्यु के बाद भी आत्मा को जीवन देनेवाला है। लेकिन जो इसे आज ठुकराते हैं, वे अंत में पछताएंगे।

धनी और लाज़र की कहानी – लूका 16:19-31

यीशु ने एक दृष्टांत में बताया:

एक धनी व्यक्ति प्रतिदिन ऐश-ओ-आराम से रहता था। और उसके
द्वार पर लाज़र नामक एक गरीब पड़ा रहता था।
जब दोनों मरे, लाज़र को स्वर्गदूतों ने इब्राहीम की गोद में पहुँचाया, परंतु धनी नरक में चला गया।

लूका 16:24
“उस ने पुकार कर कहा, ‘हे पिता इब्राहीम, मुझ पर दया कर और
लाज़र को भेज, कि वह अपनी उंगली का सिरा जल में भिगोकर मेरी
जीभ को ठंडक पहुँचाए; क्योंकि मैं इस ज्वाला में पीड़ित हूँ।’”

वह प्यासा था—जीवित जल की प्यास—जो आत्मा को जीवन देती है। उसने चाहा कि उसे बस एक बूंद मिल जाए, लेकिन बहुत देर हो चुकी थी।

उस प्यास का कारण क्या था?

धनी व्यक्ति ने अपने जीवन में कभी आत्मिक प्यास को गंभीरता से नहीं लिया। उसे लगा कि उसकी धन-दौलत, स्वास्थ्य, और ऐशोआराम उसे जीवन दे सकते हैं। लेकिन मृत्यु के बाद, कोई धन, कोई मित्र, कोई डॉक्टर, कोई सुरक्षा नहीं बचा सका।

केवल यीशु ही जीवन का जल है।

“नरक में न मरने वाला कीड़ा” – मरकुस 9:43-48

यीशु ने बताया कि नरक में न केवल आग होती है, बल्कि वहाँ एक कीड़ा है जो कभी नहीं मरता।

यह कीड़ा प्रतीक है – पछतावे की यादों का, जो आत्मा को
कुतरते हैं।
हर व्यक्ति वहां अपने जीवन के उन पलों को याद करेगा जब वह बच सकता था लेकिन उसने मसीह को ठुकरा दिया।

अंतिम न्याय – शरीर और आत्मा दोनों का नाश

एक दिन सब मरे हुए लोग जी उठेंगे और न्याय की अदालत में खड़े होंगे:

यूहन्ना 5:28-29
“…वे निकलेंगे: जो भलाई करते हैं, वे जीवन के लिए, और जो बुराई करते हैं, वे न्याय के लिए।”

हर व्यक्ति को उसके कर्मों के अनुसार न्याय मिलेगा। और जिनका नाम जीवन की पुस्तक में नहीं पाया जाएगा, उन्हें आग की झील में फेंका जाएगा, जहां शरीर और आत्मा दोनों का नाश होगा।

प्रकाशितवाक्य 21:8
“…उनकी स्थान आग और गंधक की झील में होगा। यही दूसरी मृत्यु है।”

समाप्ति – मसीह का अंतिम निमंत्रण

प्रकाशितवाक्य 22:16-17
“मैं यीशु… कहता हूं…
और आत्मा और दुल्हिन कहती हैं, ‘आ!’
और जो सुनता है वह भी कहे, ‘आ!’
और जो प्यासा हो वह आए;
जो चाहे वह जीवन का जल मुफ्त में ले।”

अब क्या करें?

पश्चाताप करें।
यीशु मसीह के नाम से जल में डुबकी द्वारा बपतिस्मा लें। पवित्रता का जीवन जिएं।
जब तक समय है, जीवन के जल को ग्रहण करें।
क्योंकि मृत्यु के बाद प्यास तो होगी, लेकिन पानी नहीं मिलेगा।

परमेश्वर आपको आशीर्वाद दे।

Share on:
WhatsApp